SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-1, Issue-3, March- 2024
www.shikshasamvad.com

"पं0 मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक विचारों का अध्ययन एवं वर्तमान भारतीय शिक्षा में प्रासंगिकता"

सुमन कुमारी
शोधार्थिनी
ग्लोकल विश्वविद्यालय, सहारनपुर, उ0प्र0.

डॉ0 धर्मेन्द्र सिंह
शोध पर्यवेक्षक
ग्लोकल विश्वविद्यालय, सहारनपुर, उ0प्र0

शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास उसके ज्ञान एवं कला–कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। और यह कार्य मनुष्य के जन्म से प्रारम्भ हो जाता है। बच्चे के जन्म के कुछ दिन बाद ही उसके माता–पिता एवं परिवार के अन्य सदस्य उसे सुनना और बोलना सिखाने लगते हैं। जब बच्चा कुछ बड़ा होता है तो उसे उठने–बैठने, चलने–फिरने, खाने–पीने तथा सामाजिक आचरण की विधियाँ सिखाई जाने लगती हैं। ज बवह तीन–चार वर्ष का होता है तो उसे पढ़ना लिखना सिखाने लगते हैं। इसी आयु पर उसे विद्यालय भेजना प्रारम्भ किया जाता है। विद्यालय में उसकी शिक्षा बड़े सुनियोजित ढंग से सलती है। विद्यालय के साथ–साथ उसे परिवार एवं समुदाय में भी कुछ न कुछ सिखया जाता रहता है और सीखने–सिखाने का यह क्रम विद्यालय छोड़ने के बाद चलता रहता है और जीवन भर चलता है। और विस्तृत रूप में देखें तो किसी समाज में शिक्षा की यह प्रक्रिया सदैव चलती रहती है। अपने वास्तविक अर्थ में किसी समाज में सदैव चलने वाली सीखने–सीखाने की यह सप्रयोजन प्रक्रिया ही शिक्षा है।

प्राचीन कानल में आवश्यकता के अनुसार शिक्षा का विकास हुआ। प्रत्येक युग में उस समय की आवश्यकता के अनुसार शिक्षा व्यवस्था का विकास हुआ। किसी भी युग और काल में जब अत्याचार, व्यभिचार व भ्रष्टाचार अपनी चरम सीमा पर पहुँच जाता है जिसके परिणाम स्वरूप सामाजिक राजनैतिक और धार्मिक मूल्यों में ह्रास होने लगता है तब एक नवीन युग का आविर्भाव होता है। उस समय ऐसी आलौकिक शक्तियों का अभ्युदय होता है जिससे सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक सभी परिस्थितियों में नवजागरण का संचार प्रारम्भ होने लगता है। परिणामस्वरूप गहन नीरवता में आशा की ज्योति का प्रस्फुटन होने लगता है।

शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा मानव व्यतिव का विकास होता है। दयह सर्वविदित है कि सफलता पूर्णतया शिक्षा के द्वारा ही सम्भव होती है। भारत की भूमि विभिननताओं वाली भूमि है इस पर अनेक प्रकार की

जातियाँ, भाषा, रंग–रूप, वेश–भूषा और संस्कृति विद्यमान है किन्तु अनेक विभिन्नताओं के होते हुये भी भारत में अनेकता में एकता है, इस सकता के पीछे जिस वस्तु का सहयोग है वह है शिक्षा। जो कुछ भी साधन या व्यवहार मानव के ज्ञान का विकास करें, भावनाओं व इच्छाओं का पष्किार करें, तर्क–चिन्तन का विकास करें, वही औपचारिक व अनौपचारिक रूप से शिक्षा है।

शिक्षा का महत्वपूर्ण कार्य मानव व्यवहार का परिमार्जन करना है तथा इसके साथ ही संस्कृति का हस्तान्तरण करना भी है। क्योंकि शिक्षा के माध्यम से संस्कृति एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित होती रहती है।

राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षाविदों ने अनेक प्रयासों द्वारा शिक्षा के गम्भीर प्रश्नों को हल करने का साहस किया है। किन्तु शिक्षा का स्वरूप कैसा हो, हर बार अनुत्तरित रह जाता है। शिक्षा की नई नीति (1985–86) ने पर्याप्त अग्निशमन किया। किन्तु अनेक बिन्द अभी भी भारत की संस्कृति तथा आधुनिक परिप्रेक्ष्य में अनदेखे रह गए हैं। स्वतन्त्रता उपरान्त तीव्र गति से बदलते हुए भारतीय समाज को शिक्षा में बदलाव की आवश्यकता महसूस होने से यह निष्कर्ष निकलता है कि हमें निरन्तर शिक्षा के लक्ष्यों के प्रति अति जागरूक और चेतन रहने की आवश्यकता है अन्यथा 'स्पूतनिक' 'वाथजर' और 'डिस्कवरी' के इस युग में हम अन्य राष्ट्रों से पिछुड़ जायेंगे और हमारा विश्व शिरोमणि होने का स्वप्न भी ध्वस्त हो जाएगा। स्मरणीय रहे कि भारत बहुत लम्बे काल तक विश्व का गुरू रहा।

शिक्षा के क्षेत्र में मालवीय जी ने पराधीन विचारधारा में वो महत्वपूर्ण कार्य किया है जो विश्व इतिहास में एक अद्भुत घटना है। उनकी मान्यता थी कि राष्ट्रीय चरित्र के भविष्य के लिये आने वाली पीढ़ी को शिक्षा की उत्तमोत्तम व्यवस्था प्रदान की जानी चाहिये और राष्ट्र के विविध धर्मावलम्बियों मे राष्ट्रीयता एवं देश भक्ति की भावना शिक्षा द्वारा विकसित की जानी चाहिये। यही कारण है कि काशी हिन्दू विश्वविद्यालय राष्ट्रीय आन्दोलन का केन्द्र बिन्दु था।

मालवीय जी शिक्षा के माध्यम से ऐसे ''व्यक्ति'' के निर्माण के पक्षपाती थे, जो चरित्रवान होने के साथ–साथ आर्थिक, प्राविधिक, राजपीतिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान से परिपूर्ण हो। वह अपनी जीविका प्राप्त करने की सामर्थ्य रखता हों, उसे जीविका प्राप्त करने के लिये दर'दर की ठोकरें न खानी पड़ें। मालवीय जी की मान्यता है कि यदि शिक्षा द्वारा इस प्रकार के व्यक्ति का निर्माण नहीं होता तो वह शिक्षा निरर्थक और निर्जीव है।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

शर्मा, श्रीमती वीना (2009) ने अपने शोधग्रंथ ''पं॰ मदनमोहन मालवीय एवं महात्मा गाँधी का शिक्षा दर्शन : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन'' में मालवीय जी तथा गाँधीजी के शिक्षा दर्शनों का विश्लेणात्मक अध्ययन किया तथा शिक्षा के उद्देश्यों, महत्व और प्रकृति के बारे में विचार व्यक्त किये।

सिंह, नवनीत कुमार (2009) ने ''भारतीय शिक्षा व्यवसथा'' में समाजवादी चिन्तकों का शिक्षा में योगदान और उसकी वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उपादयेता'' नामक शीर्षक से अपना शोध प्रबंध प्रस्तुत किया। प्रबंध में उन्होंने पं॰ नेहरू, आचार्य नरेन्द्र देव, डॉ॰ सम्पूर्णानन्द तथा राम मनोहर लोहिया के शिक्षा दर्शनों का अध्ययन किया तथा अपने विचार व्यक्त किये।

सिंह प्रवीण कुमार (2007) ने अपने शोधप्रबंध ''भारतीय शिक्षा व्यवस्था में समाजवादी चिन्तकों के योगदान का तुलनात्मक अध्ययन'' में समाजवादी चिन्तकों के जीवन दर्शन, शिक्षा दर्शन तथा समाज एवं संस्कृति का अध्ययन किया। इसमें उन्होंने पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि, नारी शिक्षा, साक्षरता अभियान, विज्ञान तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा, अनुशांसन आदि विषयों पर अध्ययन किया तथा सुझाव दिये।

वर्मा (2006) वर्मा ने 'गीता के शिक्षा के दर्शन का आधुनिक शिक्षा के सन्दर्भ में समीक्षात्मक अध्ययन'' नामक विषय पर अपना शोध कार्य किया तथा यह निष्कर्ष निकाला कि गीता शक्षिक दर्शन वर्तमान शिक्षा को सुधारात्मक स्वरूप प्रदान कर सकता है।

श्रीमती गौतम (2003) श्रीमती गौतम ने श्रीमद् भगवत गीता की शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श नामक शोध समस्या पर कार्य किया है तथा गीता की शिक्षा में उपयोगिता का विवेचन किया है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व–

महामना जी के शैक्षिक विचार वर्तमानकाल में शिक्षा जगत में एक जीवन प्रकाश की किरणें बिखेर सकते हैं क्योंकि वर्तमान शिक्षा जगत को जिन लक्ष्यों और आदर्शों की अधिक आवश्यकता है। वे महामाना जी के शैक्षिक विचारों में निहित हैं। इसी कारण से शोधकर्त्री ने ''मदनमोहन मालवीय के शैक्षिक विचारों का अध्ययन एवं वर्तमान भारतीय शिक्षा के सन्दर्भ में प्रासंगिकता'' नामक विषय शोध अध्ययन हेतु चुना है। अतः शोधकर्त्री अपने शोध के माध्यम से महामना जी के शैक्षिक विचारों को जानने का प्रयास किया ताकि उनके विचारों का अध्ययन कर वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इनकी महत्ता देखकर इनको अपनाया जा सके।

भारत में वर्तमान काल में जो शिक्षा पद्धति प्रचलित है। वह विद्यार्थियों के बहुमुखी विकास में सहायक बनने के बजाय बाधाक बन गई है। शैक्षिक मूल्य नष्ट हो गये हैं। इस प्रकार की परिस्थितियों में ऐसी शिक्षण प्रणाली की व्यवसाी की जानी उचित होगी, जो सम्पूर्ण समाज को ज्ञान प्रदान करे, नैतिक मूल्यों को पुनः स्थापित का पाये। इन महत्वपूर्ण उद्देश्यों को पूरा करने में महान शिक्षाशास्त्री व दार्शनिक महामना जी के शैक्षिक विचार अवश्य उपयोगी हैं।

अध्ययन के उद्देश्य–

1. शिक्षा का अर्थ एवं उद्देश्यों पर मालवीय जी के विचारों का अध्ययन करना।
2. मालवीय जी के जीवन व कार्यों तथा शैक्षिक विचारों को प्रकाश में लाना।
3. मालवीय जी के पाठयक्रम एवं शिक्षण विधियों का अध्ययन करना।
4. मालवीय जी के शैक्षिक विचारों की वर्तमान में प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

अध्ययन की अवधारणायें–

1. मदनमोहन मालवीय जी के शैक्षिक विचार वर्तमान भारतीय शैक्षिक प्रणाली में महत्व रखते हैं।
2. मदनमोहन मालवीय द्वारा प्रतिपादित शिक्षा के लक्ष्य एवं उद्देश्य वर्तमान शैक्षिक प्रणाली के विकास में महत्व रखते हैं।
3. मदनमोहन मालवीय द्वारा वर्णित शिक्षण विधियाँ वर्तमान भारतीय शिक्षा प्राणाली में प्रासंगिक हैं।
4. मदनमोहन मालवीय द्वारा वर्णित शिक्षा वर्तमान शिक्षा के विकास में सहायक है।

अध्ययन में सम्मिलित व्यक्तित्व–

मदन जी मालवीय जी–

हमारे देश में समय–समय पर अनेकों महापुरुषों ने इस भूमि पर जन्म लिया है। उन्हीं में महामना जी का नाम भी सूर्य की भांति चमकता है। मदनमोहन मालवीय जी बीसवीं शताब्दी के एक महान दार्शनिक समाज सुधारक, राजनीतिज्ञ, धर्मिक सुधारक के साथ–साथ महान शिक्षाशास्त्री भी थे।

महामना जी का शिक्षा दर्शन तत्व मीमांसीय एवं ज्ञान मीमांसीय दोनों ही दुष्टिकोण पर आधारित था। उन्होंने नैतिक जगत के साथ यथार्थ सत्ता, ब्रहम के ज्ञान को भी अपनी शिक्षा का महत्वपूर्ण हिस्सा बनाया। महामना जी ने संसार के भौतिक एवं वैज्ञानिक विकास पर अपना ध्यान केन्द्रित किया है।

मदनमोहन मालवीय जी की विचारधारा तत्कालीन सामाजिक जरूरत के अनुसार शिक्षा के कुछ उद्देश्य निश्चित किये जो निम्नवत् हैं–

- चारित्रिक विकास का उद्देश्य
- स्वराज प्राप्ति का उद्देश्य
- थ्वश्वबन्धुत्व का उद्देश्य
- प्राचीन शिक्षा की रक्षा एवं भौतिकवाद से समन्वय का उद्देश्य
- उद्योगों के विकास का उद्देश्य
- मातृभाषा के प्रयोग का उद्देश्य

समस्या का सीमांकन–

प्रस्तुत शोध में महामना जी के शिक्षा सम्बन्धी विचारों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य मं प्रासंगिकता को प्रस्तुत करने को प्रयास किया गया। यह शोध अध्ययन महामना जी द्वारा प्रस्तुत शिक्षा के उद्देश्य पाठ्यक्रम, शिक्षण–विधि, शिक्षक, गुरु–शिष्य सम्बन्ध, जन शिक्षा के सम्बन्ध में दिये गये विचारों तक ही परिसीमित है।

शोध विधि एवं प्रक्रिया–

वर्तमान अध्ययन मूल रूप से मदन मोहन मालवीय के ग्रन्थों, लेखों तथा अन्य स्रोतों के आधार पर उनके शिक्षा दर्शन को सुव्यवस्थित करने और उनके दर्शन के आधार पर शिक्षा के स्वरूप, उद्देश्य तथा मूल्य औश्र शिक्षण पद्धतियों आदि का मीमांसा प्रस्तुत करने हेतु नियोजित किया है।

शोध विधि का चयन–

ऐतिहासिक अनुसंधान का सबसे बड़ा गुण वर्तमान पर प्रकाश डालने की क्षमता है। वर्तमान शिक्षा पद्धति को प्रकाशित करने के लिए प्रस्तुत शोध में ऐतिहासिक विधि को अपनाया गया। इसके अन्तर्गत मालवीय जी की शिक्षा सम्बन्धी विचारधारा का वैज्ञानिक अध्ययन किया गया। ऐतिहासिक अनुसंधान विधि का नेतृत्व शिक्षा के क्षेत्र में इसलिए है कि इसके द्वारा ही आज प्रचलित शैक्षिक परिपाटियों का उद्गम कैसे हुआ? किसी उच्च कोटि की शैक्षिक संस्था ने विकास कैसे किया? विगत में अपनायी गयी बहुत सी शैक्षिक नीतियों के क्या परिणाम रहे? ये महत्वपूर्ण प्रश्न है और उनका प्रति उत्तर ऐतिहासिक अनुसंधान से ही मिल सकता है।

मलवीय जी के भाषण तथा रचनाओं के आधार पर उनके शिक्षा दर्शन को सुव्यवस्थित करने और उनके दर्शन के प्रयोगात्मक आधार पर शिक्षा का स्वरूप, उद्देश्य तथा शिक्षण पद्धतियों आदि की मीमांसा प्रस्तुत करने

के लिए नियोजित किया गया है। मालवीय जी का शिक्षा दर्शन अतीत में उनके द्वारा रचित रचनाओं तथा उनके शिक्षा दर्शन पर आधारित अन्य लेखकों के ग्रन्थों, पत्र पत्रिकाओं में दृष्टिगोचर होता है। ये सभी ग्रन्थ ऐतिहासिक स्रोत से सम्बन्धित हैं। इन्हीं के आधार पर मालवीय जी का शिक्षा दर्शन उभर कर सामने लाने में सहायता प्राप्त होगी।

जनसंख्य एवं न्यादर्श–

प्रस्तुत अध्ययन में मदनमोहन मालवीय जी द्वारा रचित विभिन्न पुस्ताकों, लेखों, पत्रों का तथा मालवीय जी के बारे में विभिन्न विद्वानों एवं लेखकों द्वारा रचित पुस्तकों, लेखों तथा अन्य अध्ययन सामग्री का अध्ययन किया गया।

चूंकि समय तथा शक्ति को दृष्टिगत रखते हुए मालवीय जी पर सम्पूर्ण विषय सामग्री को सम्मिलित करना सम्भव नहीं था। इसलिए प्रस्तुत शोध में मालवीय जी के शैक्षिक दर्शन एवं विचारों पर आधारित चुनिंदा, पुस्तकों, पत्रों, भाषणों एवं लेखों का प्रयोग अध्ययन एवं विश्लेषण के लिए किया गया।

तथ्यों का संकलन–

इसमें निम्न साधन व स्रोतों को प्रयोग में लाये गये–

(क) प्राथमिक स्रोत– इसके लिए मदनमोहन मालवीय जी कृत साहित्य का अध्ययन करना।

(ख) द्वितीय स्रोत– मदनमोहन मालवीय जी के जीवन दर्शन पर अन्य लेखकों द्वारा लिखे साहित्य का अध्ययन करना।

निष्कर्ष–

- मदन मोहन मालवीय जी ने सैद्धान्तिक शिक्षा के साथ–साथ व्यवहारिक शिक्षा पर भी बल दिया है।
- मदन मोहन मालवीय जी ने पुस्तकीय ज्ञान के साथ–साथ हस्त कौशल की महत्ता पर बल देते हुए हस्त कौशल को बेरोजगारी से बचने का सबसे अच्छा साधन माना है।
- मदन मोहन मालवीय जी ने धार्मिक शिक्षा को बहुत महत्वपूर्ण माना है।
- मदन मोहन मालवीय जी ने स्त्री–शिक्षा पर अत्यन्त जोर दिया तथा समाज एवं राष्ट्र की उन्नति के लिए स्त्री शिक्षा को आवश्यक माना है।
- मदन मोहन मालवीय जी ने जन शिक्षा पर बल देते हुये निःशुल्क शिक्षा को महत्वपूर्ण बताया है।
- मदन मोहन मालवीय जी ने शिक्षा के माध्यम से देशभक्ति, राष्ट्रीय प्रेम व विश्वबन्धुत्व की भावना का विकास माना है।
- मदन मोहन मालवीय जी ने गुरु और शिष्यों के बीच मधुर सम्बन्धें का होना आवश्यक बताया है, और कहा है कि शिक्षका को समाल का आदर्श व्यक्तित्व वाला व्यक्ति तथा सत्य–निष्ठ आचरण करने वाला होना चाहिए।
- मदन मोहन मालवीय जी का मात्रा उद्देश्य मानव जीवन का सर्वांगीण विकास करना माना है।

मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक विचारों का वर्तमान भारतीय शिक्षा में प्रासंगिकता

महामना जी भारत की प्राचीन गौरवमयी संस्कृति को आधुनिकता से जोड़कर एक ऐसी आधारशिला रखना चाहते थे, जो कए आदर्श भवन का निर्माण कर सकें तथा भारत की खोई हुयी अस्मिता पुनः प्राप्त हो जायें। शिक्षा का चारों ओर विकास और प्रसार हो, इसके लिए उन्होंने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की। उनका मानना था कि व्यक्ति के सम्पूर्ण उद्भव तथा विकास के लिए रूपी अस्त्र बहुत ही उपयोगी है। महामाना जी का विश्वास आध्यात्मिकता में भी था। वह मानते थे कि इसके माध्यम से ही नैतिक व चारित्रिक विकास होता है, और मोक्ष की प्राप्ति होती है।

वर्तमान में राष्ट्र–प्रेम के भाव को उत्पन्न करने के लिए महामना जी के विचारों का महत्वपर्ण योगदान मिल सकता है। आज के युग में प्रत्येक राष्ट्र अपने राष्ट्रीय कर्त्तव्य व राष्ट्रीय प्रेम को भूलता जा रहा है। ऐसे में यदि उनके बताये रास्ते पर चले तो राष्ट्रीय सहयोग व प्रेम की भावना का विकास हो सकता है।

महामना जी ने अपने शैक्षिक विचारों और कार्यों के द्वारा भारत में समाज सुधार के अनेक प्रयत्न किये। इस महान विभूति को समाज कभी भी विस्मरण नहीं कर सकता है। मदन मोहन मालवीय जी ने समाज में व्याप्त कुरीतियों व बुराईयों व बुराईयों को दूर करना अपना परम कर्त्तव्य समझा। उसी प्रकार वर्तमान की युवा पीढ़ी को भी इस महान विभूति के समान भारतीय समाज की बुराईयों को दूर करने का निरन्तर प्रयत्न करना चाहिए। वर्तमान समय में भारतीय समाज में अनेक कुरीतियां व अंधविश्वास चारों ओर व्याप्त हैं। जिन्हें पंडित मदन मोहन मालवीय जी के महान शैक्षिक विचारों व जीवन आदर्शों के प्रसार से दूर किया जा सकता है। आज के इस दौर में भारतीय समज को इस महान विभूति के समान विद्यान, त्यागी व वीर साहसी नौजवानों की आवश्यकता है। जो देश को प्रगति की ओर ले जा सके।

सन्दर्भ सूची

- चतुर्वेदी, सीता राम, महामना पं॰ मदनमोहन मालवीय, तारा प्रकाशन, वाराणसी, 1936.
- ए॰एस॰ अल्तेकर, महामना पं॰ मदनमोहन मालवीय, तारा प्रकाशन, वाराणसी, 1936.
- लल, मुकुट बिहारी, महामना पं॰ मदनमोहन मालवीय, तारा प्रकाशन, वाराणसी, 1978.
- मिश्र, आत्मानन्द, महामाना पं॰ मदनमोहन मालवीय, तारा प्रकाशन, वाराणसी, 1978.
- एम॰बी॰बुच, फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, 1983–88, वाल्यूम–1 (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधन और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली, 1991.
- गुप्ता राम बाबू शिक्षा दर्शन।
- लाल, रमन बिहारी, शिक्षा के दार्शनिक और समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस, मेरठ।
- मालवीय पदमकान्त, मालवीय जी के लेख वाराणसी विश्वविद्यालय प्रकाशन।
- सारस्वत मालती, शिक्षा सिद्धान्त।
- सक्सैना एन॰आर॰ स्वरूप शिक्षा के दार्शनिक तथा सामाजिक सिद्धान्त, लॉयल बुक डिपो, मेरठ।

SHIKSHA SAMVAD

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online) Impact-Factor, RPRI-3.87
Volume-01, Issue-03, March- 2024
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-March-2024/32

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

सुमन कुमारी एवं डॉ0 धर्मेन्द्र सिंह

For publication of research paper title

"पं0 मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक विचारों का अध्ययन एवं वर्तमान भारतीय शिक्षा में प्रासंगिकता"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-01, Issue-03, Month March, Year- 2024, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com